22-8-02

संकल्पों में भी पवित्रता को धारण कर महान बनो

(रक्षाबन्धन निमित्त सन्देश)

आज विशेष राखी के पर्व पर दादी जी और दादी जानकी जी के साथ आप सभी ब्राह्मणों की यादप्यार लेकर बाबा के पास पहुंची तो क्या देखा, दूर से ही बापदादा के दोनों नयनों और मस्तक से तीन किरणें निकल रही थी - जिस पर लिखा हुआ था – ''स्व रक्षक, विश्व रक्षक और प्रकृति रक्षक''। मैं उस लाइट को देखते-देखते बाबा के सम्मुख पहुंच गई। बाबा ने शक्ति स्वरूप मधुर बोल में कहा कि ''आओ मेरी विश्व कल्याणकारी बच्ची आओ'', आज क्या समाचार लाई हो?

हमने कहा बाबा आजकल तो सब राखी का उत्सव खूब मना रहे हैं। बाबा बोले, आज के समय अनुसार सर्व आत्माओं को पवित्रता की ही आवश्यकता है। पवित्रता नहीं तो सुख-शान्ति भी नहीं आ सकती। आप ब्राह्मण बच्चों को भी वर्तमान समय हर संकल्प में पवित्रता ही महान बनाती है। ब्राह्मण बच्चों ने जब से ब्राह्मण जन्म लिया है तब से ही बापदादा ने पवित्रता का कंगन बांधा है, इस बंधन को सब मिलकर फिर से स्मृति स्वरूप बनने और बनाने के लिए यह उत्सव मनाते हैं।

बापदादा सभी देश विदेश के बच्चों के उमंग को देख खुश होते हैं। स्व-परिवर्तन और विश्व परिवर्तन का कितना उमंग-उत्साह बच्चों में है, यही मूल आधार है - सम्पन्न और बाप समान बनने का। यह रक्षाबन्धन सर्व आत्माओं को सहज सन्देश देने का भी बहुत अच्छा साधन है क्योंकि यह स्नेह का सम्बन्ध सबको बहुत प्यारा है। बापदादा तो यही कहते कि खूब सेवा करो और पवित्रता द्वारा सभी को सुख-शान्ति की अंचली दो। दाता बन ज्ञान

दान, शक्ति दान, गुणदान करते चलो। फिर बाबा बोले, दिलाराम बाबा बच्चों को बहुत दिल से याद करते हैं। ऐसे कहते बापदादा जैसे सर्व बच्चों को स्नेह से देख रहे थे, इतने में क्या देखा दोनों दादियां और चारों ओर के सभी सर्विसएबुल बच्चे बाबा के सम्मुख पहुंच गये। बापदादा बहुत मीठी दृष्टि हर एक को दे रहे थे, जब बाबा की दृष्टि हर एक बच्चे पर पड़ती थी तो सबके मस्तक पर लाइट का ताज चमकने लगता था, जो दृष्य बहुत सुन्दर लग रहा था। बापदादा बोले बच्चे, ऐसे ही सदा लाइट, माइट स्वरूप भव और फ़रिश्ता भव! ऐसे बापदादा से मिलन मनाते मैं साकार वतन में पहुंच गई। ओम् शान्ति।